जयप्रकाश नारायण का व्यक्तित्व एवं विचारधारा

मोनीम अख्तर

जयप्रकाश नारायण का व्यक्तित्व एक विराट स्वरूप को प्रदर्शित करता है। जिसमें मानवता की सेवा के प्रति संवेदनशीलता, सहिष्णुता एवं भावुकता का अत्यन्त ही आकर्षक समन्वय दिखाई देता है। उनके व्यक्तित्व में तीन तत्व उभर कर आते हैं–सादगी, सौम्यता और निष्कपटता, जो उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में परिलक्षित होता है। जयप्रकाश नारायण ने अपने नैतिक और बौद्धिक विकास के क्रम में अलग–अलग राजनीतिक विचारों एवं विचारधाराओं को अपनाया। प्रारम्भ में वे मार्क्सवादी थे। उसके बाद लोकतांत्रिक समाजवादी, फिर गांधीवादी, सर्वोदयी और अन्तिम समय में सम्पूर्ण क्रांति के वाहक बने। यद्यपि इन विचारों में ऊपर से विविधता, लेकिन आन्तरिक स्तर पर एकता और निरन्तरता दिखाई देती है।

जयप्रकाश नारायण का मानना था कि राजनैतिक सत्ता दिलानेवाली स्वतंत्रता तथा जनता की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन के लिए राज्यसत्ता पर निर्भरता काफी नहीं है। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन और लोकतंत्र के लिए जनता की सहभागिता को आवश्यक बताया। वे सामाजिक एवं आर्थिक न्याय तथा राजनैतिक अधिकार के आधार पर एक अहिंसक सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते थे। इस उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने संपूर्ण क्रांति का विचार प्रस्तुत किया।